2120

नोट–केन्द्र के नाम की मुहर उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग पर न लगाएं।

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावेगा–

अनुक्रमांक (अंकों में)–

अनुक्रमांक (शब्दों में)–

विषय– हिन्दी

प्रश्नपत्र संकेतांक– 201(HAB)

परीक्षा का दिन– बुधवार

परीक्षा तिथि– 28-02-2024

कक्ष निरीक्षक द्वारा भरा जाय–

केन्द्र संख्या–

परीक्षा कक्ष संख्या– 113

उपरोक्त सभी प्रविष्टियों की जाँच मेरे द्वारा सावधानीपूर्वक कर ली गयी है।

कक्ष निरीक्षक का नाम– Anjani Mehra

दिनांक– 28/02/2024

हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक–

* प्रमाणित किया जाता है कि मैंने इस उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन समुचित प्रश्न–पत्र संकेतांक तथा मूल्यांकन निर्देशों के अनुसार किया है। प्राप्तांकों का मुखपृष्ठ पर अग्रसारण कर प्राप्तांकों एवं प्राप्तांकों के योग का मिलान कर लिया गया है। एवार्ड ब्लैंक में प्राप्तांकों की अंकना कर उनका पुनः मिलान भी कर लिया है। किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिए मैं उत्तरदायी रहूँगा/रहूँगी।

परीक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या– 240723

1. अंकेक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या– 240421

2. अंकेक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या– 240422

सन्निरीक्षा प्रयोगार्थ

सन्निरीक्षा पूर्व अंक–

सन्निरीक्षा पश्चात् अंक–

त्रुटि का प्रकार– N.C.

दिनांक–

हस्ताक्षर निरीक्षक–

परीक्षक, निम्न तालिका में प्रत्येक प्रश्न तथा उसके खण्डों के प्राप्तांकों का विवरण यथास्थान भरें।

प्रश्न संख्या	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	योग
01											
02											
03											
04											
05											
06											
07											
08											
09											
10											
11											
12											
13											
14											
15											
16											
17											
18											
19											
20											
21											
22											
23											
24											
25											
26											
27											
28											
29											
30											

योग (अंकों में)

'प्रश्न संख्या-14'

• संकेत → हरिद्वारम् _ _ _ _ _ _ _ _ _ _ _ _ _ _ _ शक्यते

(क)
उत्तर- हरिद्वारम् उच्चशिक्षायाः, संस्कृतशिक्षायाः, योगशिक्षायाः आयुर्वेदशिक्षायाः, प्रौद्योगिकीशिक्षायाः च अपि केन्द्रम् अस्ति।

(ख)
उत्तर- हरिद्वारे गुरुकुल-कांगड़ी-विश्वविद्यालयः, देवसंस्कृति-विश्वविद्यालयः, उत्तराखण्ड-संस्कृत-विश्वविद्यालय, पतञ्जलि-योगपीठं च प्रमुखानि शिक्षाकेन्द्राणि सन्ति।

(ग)
उत्तर- हरिद्वारे पौराणिकस्या संस्कृत्या सह आधुनिक भारतीयविकासस्य प्रौद्योगिक्याः च दर्शनं कर्तुं शक्यते।

प्रश्न 'संख्या - '15'

• संकेत → रात्रिर्गमिष्यति _ _ _ _ _ _ _ _ _ उज्जहार

(क)
उत्तर- यदा रात्रि गमिष्यति, तदा सुप्रभात भविष्यति।

(ग)
उत्तर- गजः गालिमाम् उज्जहार ।

'प्रश्न संख्या - 16'

(क)
उत्तर- सत्सङ्गाते मानवजीवने परिवर्तनं आगच्छन्ति, दुर्गुणानां दूरीकुरोति, गुणानां वर्धनं च भवति। सत्सङ्गाति औषधवत् दुर्गुणानां दूरीकरोति।
मानसम् विमली करोति।
अखिलम् अभीष्टं पूरयाति।

(ख)
उत्तर- मुनयः शान्तिं / मोक्षं प्राप्तुं हिमालयं गच्छन्ति,

(ग)
उत्तर- हरिद्वारे मनसादेवीमन्दिरं, चण्डीदेवीमन्दिरं, बिल्वकेश्वर मन्दिरं, दक्षेश्वरमन्दिरं, कुशावर्तम्, ब्रह्मकुण्डम् च एतानि अनेकानि प्रमुख तीर्थस्थलम् अस्ति।

प्रश्न संख्या '17'

(क) पर्वतेषु हिमालयः श्रेष्ठः।
(ख) सज्जनानां सङ्गात सत्सङ्गति भवति।
(ग) गङ्गा हिमालयात प्रवहति।
(घ) नृपः एकवारं चाणक्याय कम्बलानि दत्तवान

(क)

उत्तर- नौ + अकः -	नायकः
सूर्य + उदयः -	सूर्योदयः

(ख)

उत्तर- स्वागतम् -	सु + आगतम्
इत्यादि -	इति + आदि

(घ) शब्द	उपसर्ग	मूलशब्द
उत्तर- अनभिज्ञ	अन	भिज्ञ
अनुकूलम्	अनु	कूलम्

(ङ)

उत्तर- वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।
गंगा हिमालयात् निस्सरति।

'प्रश्न संख्या-19'

(क)	गच्छसि	त्वं कुत्र गच्छसि ?
(ख)	पतन्ति	वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।
(ग)	वयम्	वयम् विद्यालयं गच्छामः
(घ)	सः	सः पत्रं लिखति।

'प्रश्न संख्या - 1'

संकेत → ईर्ष्या - द्वेष ___ ___ ___ ___ ___ करते हैं

(क)
उत्तर - ईर्ष्या - द्वेष से प्रेरित निन्दक को कोई दण्ड देने की आवश्यकता इसलिए नहीं है, क्योंकि वह निन्दक बेचारा स्वयं की असक्षमता से स्वयं ही दण्डित हो जाता है।

(ख)
उत्तर - निन्दा का उद्गम ही हीनता और कमजोरी से होता है, मनुष्य अपनी हीनता से दबता है वह दूसरों की निन्दा करके ऐसा अनुभव करता है कि वह उत्कृष्ट व बाकी सब निकृष्ट है। इसलिए मनुष्य निन्दा करता है।

(ग)
उत्तर - स्वर्ग में देवताओं को बिना अर्जित किया अन्न, बे-बनाया महल और बिन बोये फल मिलते हैं। इसलिए अकर्मण्यता में, उन्हें अप्रतिष्ठित होने का भय बना रहता है। इसलिए कर्मी मनुष्यों से उन्हें ईर्ष्या होती है।

"ईर्ष्या द्वेष का उद्गम हीनता है उसकी समाप्ति ही एक उचित उपाय है"

(ङ)

उत्तर- उपर्युक्त गद्यांश शीर्षक – 'ईर्ष्या - द्वेष से प्रेरित निन्दा'

ईर्ष्या द्वेष - 'निन्दा का उद्गम', 'निन्दक का कष्ट'

'प्रश्न संख्या - 4'

(क)

उत्तर- क्रियापद - खेलता हूँ

क्रिया भेद - अकर्मक, समापिका, सामान्य क्रिया

(ख)

उत्तर क्रिया पद - पढ़ रहा था

क्रिया भेद - अकर्मक, समापिका, सहायक क्रिया

प्रश्न - संख्या -'०५'

(ग)

उत्तर-'अथाति् !'

(घ)

उत्तर- 'शाबाश !'

(क)
उत्तर- गोपाल द्वारा नवनीत को खाया गया।
गोपाल द्वारा नवनीत को खिलाया गया।

(ख)
उत्तर- राम ने धनुष तोड़ा।

(ग)
उत्तर रचना की दृष्टि से यह 'सरल वाक्य' है।
चूंकि इसमें एक ही मुख्य क्रिया है।

(घ)
उत्तर- रचना की दृष्टि से यह 'मिश्र वाक्य' है।
चूंकि इसमें 'यदि तुम परिश्रम करते' आश्रित उपवाक्य है। व 'तो प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होते' 'प्रधान वाक्य' है।

उप

'प्रश्न संख्या - 6'

(क)
उत्तर- वारिद।

(ख)
उत्तर- दिनकर।

पत्र-लेखन

मकान नम्बर - 46
प्रेमनगर ऋषिकेश।
28 फरवरी 2024

प्रिय मित्र विनीता,
मधुर स्मृति

मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ, आशा है कि तुम भी कुशल व आनन्द होगी। अभी-अभी तुम्हारा भेजा हुआ यह उपहार स्वरूप प्राप्त डिजिटल कैमरा प्राप्त हुआ सारे काम छोड़कर इसके लिए तुम्हें आभार ज्ञापित करने के लिए पत्र लिखने बैठी हूँ, मुझे तो यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता है कि तुम्हें मेरा जन्मदिन याद था. मुझे इन वस्तुओं का बहुत शौक है बिल्कुल सही समय पर मुझे यह प्राप्त हुआ. मैं पूर्ण हर्ष के साथ तुम्हें धन्यवाद कहती हूँ और तुम्हारा आभार ज्ञापित करती हूँ, यह बेहद बेशकीमती लगता है! इससे मुझे तुम्हारे स्नेह की सुगन्ध यहाँ तक आ रही है. मैं जानती हूँ कि तुम्हें परीक्षा की तैयारी पूर्ण करनी है इसलिए तुम मेरे जन्मदिन में उपस्थित नहीं हो पाओगी परन्तु तुम्हारी परीक्षा के पश्चात मैं ही तुमसे मिलने आ जाऊँगी।

माता-पिता जी को मेरा प्रणाम व निक्की के लिए बहुत सारा प्यार
पुनः एक बार धन्यवाद सहित

तुम्हारी मित्र
क. ख. ग.

• संकेत → बिहसि ------------------------------
------- तुम्हारे ।

(क)
उत्तर- लक्ष्मण ने परशुराम को मृदुवाणी से समझाया कि आप मुझे पुनः -पुनः यह अपना फरसा दिखाकर फूंक से पहाड़ उड़ाने का प्रयास कर रहे हम क्षत्रिय कुल के हैं हम इतने निर्बल नहीं कि आपके घमण्ड व धमकियों से डर जायेंगे हम कोई छुई- मुई के पौधे नहीं हैं जो तर्जनी देखकर मुरझा जायेंगे।

(ख)
उत्तर- लक्ष्मण ने अपनी कुल परम्परा की निम्नलिखित विशेषताएँ बतायी हैं-

(i) लक्ष्मण के अनुसार ब्राह्मण, देवताओं, भक्तों व गायों पर अपनी वीरता नहीं दिखाते इनको वध करने से पाप लगता है।

(ii) हम क्षत्रिय कुल के वंशज हैं हम केवल अपने बल- प्रताप का बखान नहीं करते अपितु शत्रु को युद्ध में पराजित भी करते हैं।

(iii) हम ऋषिमुनियों व भृगुसुत (परशुराम) पर अपना बल नहीं दिखाते और जनेऊ धारी पर अपना बल नहीं दिखाते और हमे मार भी दें फिर भी हम आपसे क्षमा ही

'प्रश्न संख्या - 8'

(क)

उत्तर- फागुन के मास में जो मस्ती - मादकता व प्राकृतिक सुषमा व्याप्त होती है वह अन्य ऋतु में नहीं होती है। वसन्त ऋतु के इस फागुन मास में न अधिक सर्दी होती है न अधिक गर्मी चारों ओर इतनी हरियाली होती है कि मन तृप्त हो जाता है। पेड़ों की डालें पत्तों से ढक जाती हैं, कहीं लाल तो कहीं पीले पत्ते आने लगते हैं। नये - नये फूल मुख्यतः टेसू के फूल खिलने लगते हैं। उनकी सुगन्ध पूरे वातावरण को मोहक करती कोयल के गायन से मन उत्साह का संचार होता है, लोगों के तन - मन की मस्ती दर्शनीय होती है। यह सब मादकतापूर्ण स्वरूप अन्य ऋतु में नहीं दिखाई देता है।

(ग)

उत्तर- 'आत्मकथ्य' कविता में कवि जयशंकर प्रसाद अपनी दुर्बलताओं का उल्लेख न करने का वर्णन करते हैं, वे यह भी कहते हैं कि उनका जीवन सुखद अनुभवों से रिक्त है परन्तु उसमें उनके कुछ प्रेम के क्षण भी है जिन्हें वे संबल बनाकर अपनी यात्रा ठीक

पाथिक (यात्री) यात्रा करते समय अपनी यात्रा के लिए आवश्यक पाथेय अर्थात रास्ते का (भोजन, नाश्ता इत्यादि) अपने साथ रखता है वह अपनी लम्बी दूरी उसी के सहारे पूर्ण करता है। ठीक उसी प्रकार कवि ने भी अपनी सुखद स्मृतियों को पाथेय बनाया है व अपनी यात्रा रूपी जीवन को पूर्ण किया है।

प्रश्न- संख्या-'9'

(क)
उत्तर- गोपियों ने योग सन्देश उन्हें देने के लिए कहा है जिनके मन चक्र के समान अस्थिर व चंचलतापूर्ण होते हैं। जिनका मन आज इस एक ईश्वर की भक्ति पर तो कल दूसरे। परन्तु वे कहती हैं कि हमारा चित्त तो श्रीकृष्ण के प्रति एकाग्र है। यह योग साधना चलायमान मनवाले लोगों के लिए उत्तम है।

(ख)
उत्तर- 'उत्साह' एक प्रतीकात्मक कविता है। यह बादल के लिए एक आह्वान गीत है कवि 'सूर्यकान्त त्रिपाठी' द्वारा यह संदेश दिया गया है कि समाज में किसी परिवर्तन के लिए क्रान्ति आवश्यक है। इसलिए वे बादलों को क्रान्तिदूत की

कहते हैं। व सम्पूर्ण वातावरण को एक नया स्वरूप प्रदान करने की बात कहते हैं।

'प्रश्न संख्या - 10'

• संकेत → आषाढ़ की ---------- लगाती है।

(क)

उत्तर- आषाढ़ की रिमझिम वर्षा में समूचा गाँव खेतों पर उमड़ पड़ता था, कहीं हल चल रहे होते थे तो कहीं रोपनी होती थी, "धान के पानी भरे खेतों पर बच्चे उछल रहे हैं, औरत कलेवा लेकर मेड़ पर बैठी हैं। आसमान बादल से घिरा हुआ है।" धूप का नाम तक नहीं होता था। ठंडी पुरवाई अर्थात हवा चलती थी समूचा गाँव पूर्ण मस्ती व मेहनत से खेती करते थे उनके भीतर उत्साह का एक अलग ही रूप दिखाई देता था। वास्तव में आषाढ़ का मास किसी 'आदर्श वातावरण' से कम न था।

(ख)

उत्तर- बालगोबिन भगत के मधुर संगीत की निम्नलिखित विशेषताएँ थी -

(ii) उनके गीतों को सुनकर बच्चे खेलते हुए झूमने लगते थे, हलवाहों के पैर क्रम से उठते थे उनके गीत सरस व मंत्रमुग्ध करने वाले होते थे। रोपनी करने वाले स्वयं भी गीत गाने लगते थे।

(iii) उनके गीतों में लय व ताल का समावेश रहता था।

(iv) उनके गीतों को सुनकर सभी आयु वर्ग के लोग चाहे वह 'स्त्री - पुरुष, बच्चे-युवा या वृद्ध ही क्यों न हो सभी प्रसन्न हो जाया करते थे।

'प्रश्न- संख्या - 11'

(क)

उत्तर- सुई - धागे की खोज 'शरीर को ढकने की' मूलभूत आवश्यकता के कारण हुई होगी जब मनुष्य को शीत, वर्षा आदि से बचाने के लिए कपड़ों की आवश्यकता हुई तो उन्होंने नयी प्रेरणा व योग्यता द्वारा लोहे को रगड़कर उसके तल पर छेद करके धागा पिरोया होगा, जिससे सुईधागे की खोज हुई होगी। कपड़े जैसी मूलभूत आवश्यकता की पूर्ति के लिए

(ख)

उत्तर- बालगोबिन भगत कबीर को अपना 'साहब' मानते थे उन्हीं के आदर्शों पर जीवन निर्वाह करते थे चूँकि कबीर सभी धर्मों का सम्मान व सामाजिक मान्यताओं व कुरीतियों का विरोध करते थे इसलिए बालगोबिन भगत भी सामाजिक मान्यताओं को नहीं मानते थे।

उदाहरणार्थ:

(i) बालगोबिन भगत ने अपने पुत्र की मुखाग्नि अपनी पतोहू से दिलवाई चूँकि महिलाओं का मृत्यु क्रियाक्रम भी भाग न लेना एक प्राचीन मान्यता है परन्तु भगत द्वारा उसे भी नहीं माना गया।

(ii) श्राद्धक्रम के पश्चात उन्होंने अपनी पुत्रवधू को उसके भाई के पास छोड़कर उसका दूसरा विवाह करने की दलील दी इससे यह ज्ञात होता है कि भगत जी 'विधवा-विवाह' के समर्थक थे।

उपर्युक्त उदाहरण इस बात का प्रमाण थे कि बालगोबिन भगत सामाजिक मान्यताओं को नहीं मानते थे।

प्रश्न संख्या - 12

(क)
उत्तर- हालदार साहब एक निष्ठ देशभक्त थे वह जब भी चौराहे पर नेताजी सुभाष चन्द्र की मूर्ति देखते तो उन्हें नेताजी द्वारा किए गए प्रयासों व देश के लिए अपना सबकुछ दान कर देने वाली प्रवृति उनके सामने घटित होती साथ ही उनके मन नेताजी के प्रति श्रद्धा थी जिसे वे उनकी मूर्ति को देखकर प्रदर्शित करते थे।

(ख)
उत्तर- बालगोबिन भगत वृद्ध हो चले थे उनकी तबीयत अब ठीक नहीं रहती थी जिसके कारण वह अस्वस्थ रहते थे। उनके पुत्र की मृत्यु के उपरान्त उनकी इस स्थिति में उनका सहारा उनकी पतोहू थी उनके कबीरपन्थी विचारों के कारण भी वह लम्बे उपवास रखते और अपना स्वास्थ्य खराब कर देते उनकी इसी अवस्था को देखकर पतोहू यही चिन्ता थी कि बीमारी में उन्हे चुल्लू भर पानी भी कौन देगा? खाना- पीना कौन बनाएगा साथ ही सामाजिक क्रूर दृष्टि जो विधवा के प्रति कटु थी उनके कारण भी उनकी पतोहू उन्हें नही छोड़ना चाहती थी।

(क)
उत्तर - 'माता का अंचल' पाठ में माता-पिता के स्नेह व प्रेम को वात्सल्य कहा गया है सम्पूर्ण पाठ में वात्सल्य के सुन्दर उदाहरण हैं। उनमें से कुछ निम्न हैं -

(i) पिताजी द्वारा बच्चों को गोद में लेना, उनके साथ खेलना, उन्हें हँसाना। उनके साथ खेलना व खेलकर स्वयं हार जाना 'भोलानाथ - भोलानाथ' कहकर पुकारना, बच्चों के माथे पर तिलक लगाना, उससे खट्टा-मीठा चुम्मे की माँग करना, गुरुजी से पिटने से बचाना आदि पिता द्वारा प्रेम प्रकट करने के उदाहरण हैं।

(ii) माता द्वारा बच्चे को अधिक भोजन करवाना, उसके सिर पर तेल डालना उसके बालों गूँथना, नरम-नरम कपड़े पहनाना, पुचकारना व प्यार करना व तैयार करके उसे 'कन्हैया बाबू' कहना आदि वात्सल्य के प्रमुख उदाहरण हैं।

(ख)
उत्तर - 'शिवपूजन सहाय' का यह उपन्यास देहाती दुनिया का कुछ भाग यहाँ 'माता का अंचल' नाम से यहाँ संकलित है जिसमें 1930 के दशक की ग्राम्य संस्कृति को दिखाया गया। पहले गाँव में सब सूर्योदय

पुरुषों द्वारा लम्बी - लम्बी मूँछे रखने का चलन था, परन्तु अब ये चलन समाप्तप्राय है। बच्चे पहले गुरुजी से पढ़ा करते, दोस्तों के साथ झुंड में ग्रामीण खेल खेला करते थे, पहले भोजन के साथ गोरस खाने का चलन था परन्तु अब उसका स्थान फास्ट फूड ने ले लिया। पूर्व में गाँवों में बिजली की व्यवस्था नहीं थी परन्तु अब सभी घरों में बिजली व सुख सुविधाएँ हैं।

इस प्रकार ग्रामीण संस्कृति में एक विशेष अन्तर देखने को मिला है।

(ग)
उत्तर - रात में सिक्किम का राज्य जगमगाता व झिलमिलाता था उसमें भी अधिक चमकता स्थान था गंतोक जो ऐसा प्रतीत हो रहा था कि पूरा आसमान उल्टा पड़ा हो व सारे तारे नीचे जमीन पर चमक रहे हो ढलान लेती तराई भूमि पर सितारों के गुच्छे ऐसे लग रहे थे जैसे रोशनी की झालर हो रात का दृश्य भी इतना अनन्त- नीलिमा पूर्ण था कि वह रहस्य- मय रात लेखिका के मन में गंतोक शहर के प्रति सम्मोहन जगा रही थी।

2120

नोट—केन्द्र के नाम की मुहर उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग पर न लगाएं।

नोट—परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग में अपना [illegible] केन्द्र का नाम न लिखें।

परीक्षार्थी द्वारा भरा जाय—

अनुक्रमांक (अंकों में)— [illegible]

अनुक्रमांक (शब्दों में) दो करोड़ चालीस लाख सत्तहत्तर हजार एक सौ पचास

विषय हिन्दी

प्रश्नपत्र संकेतांक— 201(HAB)

कक्ष निरीक्षक द्वारा भरा जाय—

केन्द्र संख्या— 2 1 2 0

परीक्षा कक्ष संख्या— 1 3

(उपरोक्त सभी प्रविष्टियों की जाँच मेरे द्वारा सावधानीपूर्वक कर ली गई है।)

कक्ष निरीक्षक का नाम Anjani mehra

दिनांक— 28-2-2024

हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक— Anu

परीक्षक के हस्ताक्षर व संख्या 2401030

पी०एस०यू० (आर०ई०) 15 उ०वि०शि०प० / 34–14–06–2023–2,46,000 उत्तर पुस्तिकाएं (कम्प्यूटर / ऑफसेट)।

'निबन्ध लेखन'

- **जनसंख्या वृद्धि**

- **प्रस्तावना** - भारत सांस्कृतिक ऐतिहासिक, पौराणिक देश माना जाता है। परन्तु वर्तमान में इसकी स्थिति उसी बालक समान है "जो योग्यता पूर्ण होने के बाद भी असफल है" ऐसा इसलिए कहा जा सकता है क्योंकि भारत विकासशील देश की श्रेणी में सम्मिलित है। स्वतंत्र भारत को लगे कई दशक बीत गए परन्तु भारत आर्थिक स्थिति में कोई प्रमुख अंतर नहीं है। इसका प्रमुख केन्द्र कारण है - 'जनसंख्या वृद्धि' है। महात्मा गाँधी जी कथन के अनुसार कि "भारत आगामी कुछ दशकों में पुनः विश्व गुरु बन जाएगा" परन्तु इसका कोई भी संवेदना सत्य होते हुए नहीं दिखती क्योंकि विकास में प्रमुख बाधक तत्व भारत की निरन्तर 'जनसंख्या वृद्धि' है।

- **भारत में जनसंख्या वृद्धि** :- वर्तमान दृष्टि से भारत जनसंख्या की दृष्टि से पूर्ण भारत में प्रथम स्थान पर है 2024 की गणना यह भी बताती है कि यह भारत के लिए अत्यन्त घातक वर्तमान में गणना के अनुसार भारत की जनसंख्या 144 करोड़ के आस-पास है। जो सम्पूर्ण ~~स~~ जनसंख्या सहित देश की

वनस्पति जाति पर भी इसका प्रमुख दबाव पड़ता है। "जनसंख्या वृद्धि प्रमुख समस्या नहीं है बल्कि इस जनसंख्या का बेरोजगार होकर निठल्ला घर बैठना एक प्रमुख समस्या है" अतः एक ही परिणाम सामने आता है कि भारत में जनसंख्या की स्थिति ठीक नहीं है।

- **जनसंख्या वृद्धि में संकट:-** जनसंख्या वृद्धि किसी भी क्षेत्र, समाज व देश के लिए उपयोगी नहीं है। अपितु यह संकट के अपर एक तानाशाह के समान है। इसके कारण उत्पन्न संकट के विषय में एक कृतिकार की कृति 'जनसंख्या' की मनः वेदना' इसमें कृतिकार द्वारा लिखा गया है कि "जनसंख्या वृद्धि मनुष्य की ही मनः वेदना के कारण उत्पन्न होती है।" जनसंख्या के निम्नलिखित संकट द्रष्टव्य है -
"आर्थिक असंतुलन, भरण-पोषण में परेशानी, विकसित देश का पिछड़ना, महिलाओं की दयनीय स्वास्थ्य स्थिति संसाधनों व भूमि पर बढ़ता दबाव" भारत आज यही बाधक तत्व विद्यमान है। जो इसे आगे बढ़ने में रोकते इस संकट की स्थिति का मूल जनसंख्या वृद्धि है। हम इन संकट कारण अवश्य ही पिछड़ जायेंगे व सभी (के) देश हमसे अग्रसर हो जायेंगे।

जो 2001 में हुई थी उसके अनुसार भारत की उस समय भारत की जनसंख्या 102 करोड़ के आस-पास थी पुनः 2011 की जनसंख्या के अनुसार भारत की जनसंख्या 132.6 के आस-पास व अब यह स्थिति है कि भारत में 145 करोड़ जनसंख्या निवास करती है। आँकड़ों से यह तो सिद्ध कि यदि जनसंख्या वृद्धि को नहीं रोका गया तो उसके कारण भविष्य में भी स्थिति दुभर हो जाएँगी, मानव जाति सुख के कारण समाप्त हो जाएगी भारत की इस स्थिति में भविष्य में एक घातक दुष्परिणाम होगा।

- **जनसंख्या नियन्त्रण के उपाय (उपसंहार):-**

हम यह तो जानते हैं कि भारत में जनसंख्या वृद्धि का कारण हम मनुष्य ही व इसके नियन्त्रण के उपाय सुझाने वाले व इसे लागू करने वाले भी हम ही हैं। इसलिए आवश्यकता केवल जागरूकता की व उत्तेजना को जागृत करने जनसंख्या वृद्धि को रोकने के प्रमुख उपाय निम्न हैं परिवार नियोजन कार्यक्रम, मर्म निरोधन क्षमता का प्रयोग करके, जनजागरूकता लाने के भाषण व निबंध प्रतियोगिता आयोजित करवाकर, पिछड़े, गरीब लोगों को इसके दुष्परिणामों से अवगत करवाकर अंतः यही कहा जा सकता है कि उपायों द्वारा हम जनसंख्या पर नियन्त्रण अवश्य

[illegible]
हमारे अन्दर होनी चाहिए ऐसा था
युवा वर्ग की होने कारण प्रत्येक नागरिक
पुनः सभी प्रौद्योगिकी में अन्य देशों से
आगे बढ़ सकता है। व सफलता के
शिखर को चूम सकता है व गांधी
जी का सपना 'विश्वगुरु' बनने का पूर्ण
कर सकता है।

"हम भी आगे बढ़ जाएँगे
जब जनसंख्या पर रोक लगाएँगे।
हम भी विश्व शिखर पर चढ़ जाएँगे
जब जनसंख्या पर रोक लगाएँगे"

अनुक्रमांक -